

अथ ज्ञानादि
दर्शना

ASHA ARCHIVE
2831 1

५८१॥८५
५८१॥८५
५८१॥८५
५८१॥८५
५८१॥८५
५८१॥८५
५८१॥८५





ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ त्रा ग रे ल वि । ता त ड य ॥ ॐ
 कृ णं य न क न के म नि म य । ना ना त त ना पु जा त्रि ता ॥ च
 उ दि प सं ग मः । म ध म तू मा डः । शि व ज स त्व ग तू वि ड यि
 मा २ शु म तू कां य न म नि कि त न स य त्रा त रा स व त सु ड
 वि त्रा डि गा २ शु ग तू रा स क त स द गे ना । थ । त्रे त्रे म लु ल
 नि य्या क्रि या मि २ पु थ म ग त शि ग तू म लु त जू वि का
 च त म क म ल गि त ध लि या २ यं का त जा ग्रा पूर्व वि द हा । तं का
 त जा ग्रा जा म्वा दि यं २ तं जू प त ए म ता व लि वं ड र्छ त ग तू ये वि

५१ अति॥ २॥

गहि २ अक्षरसंज्ञा न २ अक्षरसंज्ञा सर्वद्वयवत्तत्वादिगामि
 नतिवयनसंज्ञा व २ अक्षरसंज्ञा व २ अक्षरसंज्ञा व २ अक्षरसंज्ञा
 गिरवयनसंज्ञा व २ अक्षरसंज्ञा व २ अक्षरसंज्ञा व २ अक्षरसंज्ञा
 सादित्रः रलितरात्रो नकाकात्र २ अक्षरसंज्ञा व २ अक्षरसंज्ञा
 उगाता ॥ कादिहोरावत्तत्वादिगामि नतिवयनसंज्ञा व २ अक्षरसंज्ञा
 मावयः एयमात्रागणसंज्ञा व २ ॥ ५ ॥ गगहेलवि ॥ ६ ॥
 र्मानगात्र ॥ कलक्षचनविविधियक्ष्यहात्राः पूजयामि

१ कलक्षचं ॥
 २ ॥

तदवगन्ता २ विविचिउ य हा न नृ त्यगी न व नः ७ म नू द्य ञ्छ च
नि स्मं ग त्रा २ उं व जा नृ ता द कः मे ञ्छ कि नि स मः रा व नू रा
व क ष्ट य नू यं २ ग ल स स त रि णी न उ मि म हां का ल ॥ उं स
पु रि स्ति ग व जं स्या हा ॥ क न क नू य म नि न त न ल रि ल य ष
प ष्ट प त व उ य स रि ता २ पं ष्ट मृ ग पं ष्ट त न पं ष्ट उ ष धिः
पं ष्ट वृ हि ति १ ५ हा द कं २ मा जा ष्ट उ य इ वा कू नु त स रि ताः
व जा चा र्य म नू न्या सा २ दा कि नि त्रा मा ख णु ता हा नू पि नीः

॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॐ

१ उमकुदहिन ॥ ५ ॥

सुउमः सहस्रजागिनीत्रेयाः हृदयकुहरेव ॥ ॐ ॥ ठाग
त्रुवत्रलसित्रीगगधत्रीयाः एनयिवाकेवउसूनाः सुसूत्र
पी ॥ ॐ ॥ नागगन्धत्रहेत्रवी ॥ गालउप ॥ एमकुदहनपं
ॐ हानस्रूयः पंॐ मियात्रसः पंॐ सात्रीयूजिया ॥ ॐ ॥
उमकुदववलीरायगिउवनवित्र ॥ विलमत्रापकसमया
जानड ॥ ॐ ॥ वित्रवीत्रवलसहउजानन्दशुकनक
मत्रायहृदयाजानन्द ॥ ॐ ॥ पंॐ वूडपंॐ हान

१०७ ज म य र मि ॥ ६ ॥

स्वत्रूपरदवास्तुन नलप्रसूदीगहृदया॥ ५ ॥ ॐ श्रुं
ह्रीं रवं स्वधनकत्रीगः दमात्रुद्यच्छधनिविलमाश्रानः
दे॥ ५ ॥ ॥ ५ नरमिच्छधन॥ गीगवज्जमय रमि॥ ॥
गागमधूमग॥ गात्रज्य॥ वज्जमय रमियि श्वधिप्रम
गुल। मदनियति रववज्जवन्धुं २ सफसाचत्र रमी
निवासयः मात्रसयत्र सग्रासकत्र २ सुकनिसुकुं
रुं। गृहं गृहं रुं रुं। गृहापय गृहापय रुं रुं २ ॥

नयहातगवनविशात्राजचहंरुहःउदयकुन्दयःअत्रि
उदय१हासकत्रजियचिंयिउरिहयःवउपत्राकालः
हंयंहं२वउपंअलसत्रजात्रहंइतिताग्निःवउविता
नहंरं२गगगनित्रावःधकूतिताविनासयःवउ
विद्याकृगरवउत्र२अददिगमातपत्रायवित्रे
त्रःसर्वविद्याकृगरवउत्र२रुदन्तिमलुतत्रायवि
त्रेवत्रःसर्वसत्त्वहियाप्रमादकत्र२गगगुत्रुआहा

X
॥ ५५ ॥

मित्रं गतधत्रीयाः एनन्कित्रीतावज्ज हसि ठ्वधना ॥ ५५ ॥
ता गवकात्र ॥ तात्र वतकं कात्र ॥ ज्वनिनिहिताः
वामज्ज हनू सवाः स्वप्रकिताया मात्रसंतासाः ता
गधवमाहः वन्धीत्रयासाः प्रिउवनत्राया ज्वत्र
धीता ॥ ५६ ॥ नमा मिश्री वलु महात्रा वनः जात
मृउनि कुन्दिताः विष्वा नाथ विष्वाया पितः विनवि
क्रमसक्रादत्रायाः जातमृज्ज नि कुन्दिता २ ॥ जमि

रिखनाउग्रपयसाःददकत्रायाविष्टगकित्रमः
पिंदीनज्जुर्ज्जाककत्रलयनाःवैलीसकुसाःत्राव
रुसत्रना२माधवमायापूत्रदलत्रुक्राःत्रुपिषा
वापाउएत्रना२समत्रसमायाःत्रागविमाहाः
नत्रागसंभाहितदेहा२त्रलाएत्रमप्रकृतिममोत्रि
कयूत्रनापूत्रतृमडूनकात्रा२सूतनत्रनामःव
क्षिप्तचत्रनाःत्रायसूत्रव्वत्रज्ज्वलवित्र॥ ॐ ॥

ॐ
ॐ
ॐ
ॐ

नागगन्धर्वसहस्रविंशति॥ तात्रउमि॥ पूर्वहात्रयमाकक
त्रः॥ रुत्रयी॥ ननकत्रकोरुत्र२मात्रादि॥ ॐ॥ आदिस
गनपत्रिवात्रा॥ धंसयिमात्रादिविउत्र॥ ॐ ॥
पद्यपागव२सर्वद्वयत्रयकितंयहं॥ रुद्रयावहत्र२
ॐ॥ वउसत्र॥ आहात्र॥ कायवाकचित्तकिंत्रयकि॥ ॥
नाग॥ दक्षिणहात्र॥ ॐ॥ हाककत्र॥ रुत्र॥ ॐ॥ ननककोरु
त्र२मात्रादि॥ ॐ॥ आदिसगनपत्रिवात्रा॥ धंसयिमा

ग्रादिविद्युतः॥ २ ॥ ग्रागः॥ पञ्चमस्तः॥ पञ्चाक्षरः
रुलसिञ्जनककुटः॥ २ माग्रादिवत्तनादिसगनप
त्रीवाग्राः॥ ध्वनिसिमाग्रादिविद्युतः॥ ३ ॥ ग्रागः॥ ३
रुलसिञ्जनककुटः॥ रुलसिञ्जनककुटः॥ २ मा
ग्रादिकुव्यग्रादिः॥ सगनपत्रीवाग्राः॥ ध्वनिसिमाग्रादि
विद्युतः॥ ४ ॥ ग्रागः॥ हुं॥ नमो॥ नमो॥ नमो॥ नमो॥ नमो॥
सिञ्जनककुटः॥ २ माग्रादिग्रीष्मादिः॥ सगनपत्रि

वागाः धंसयिमात्रादिरुन्धने ॥ ५ ॥ रागाः ॥ अ॥ अ॥ का
लद्वितीयाः रुतयि अ॥ न॥ का॥ २ मात्रादि
अ॥ न॥ रा॥ दि॥ स॥ ग॥ न॥ प॥ त्रि॥ वा॥ गाः धंसयिमात्रादिरुन्धने ॥ ६ ॥
रागाः ॥ ने॥ अ॥ य॥ का॥ ल॥ नी॥ त॥ द॥ मु॥ वी॥ रा॥ रुतयि अ॥ न॥ न॥
का॥ २ मात्रादि क॥ प्या॥ दि॥ स॥ ग॥ न॥ प॥ त्रि॥ वा॥ गाः धंस॥
यि॥ मा॥ त्रा॥ दि॥ रु॥ न॥ ॥ ७ ॥ रागाः ॥ वा॥ यु॥ य॥ का॥ ल॥ म॥ हा॥ व॥
त्रि॥ वा॥ रुतयि अ॥ न॥ न॥ का॥ २ मात्रादि प॥ व॥ ना॥ दि॥

सगनपत्रिवात्राः धंसयिमात्रादिविन्दत्र॥ ८॥ गग॥
उर्ध्ववात्रउर्ध्ववात्राः रुतयिजनकक्रोरत्र२ मात्रादि
उक्तादि सगनपत्रिवात्राः धंसयिमात्रादिविन्दत्र॥ ९॥
गग॥ उर्ध्ववात्रसूत्राः रुतयिजनकक्रोर
त्र२ मात्रादि सूत्रादि सगनपत्रिवात्राः धंसयिमा
त्रादिविन्दत्र॥ १०॥ दधदिवा दधार्हं कात्रः पुनमा
मिदवाक्रोरत्र२ गग॥ वृत्रा नपति यात्रा मातवि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

प्रनित वागूत्र ॥ श्रीवज्रसत्त्वश्रावणविद्यातः ॥ श्रीनृस
त्रसिद्धिमाकुपदाता ॥ श्रीवज्रसत्त्वश्रावणकायवा
कचिह्नकित्रयमि ॥ ॐ ॥ वागमधुमप ॥ वागमधु
मान ॥ पुमादिमज्जादिदधमिः स्रुतुग्रीसनः मत्र
मधुत्रसहिमत्रयना २ द्वादशभुजचउवदनस्रु
गः वज्रवात्राहिज्जालिगना ॥ ॐ ॥ हूं हूं हूं २ द्वादश
गउवजः मात्रसयलसम्याविद्यात्र २ द्वादशजालिगनः

अदयसंरायः नां श्रियदा मे समस्तत्राया २ कृति ७ अ०
७८ गजचर्मवीरुषिगः कृति १० दमत्रुपि गुरुत्रधत्रा २ मा
५ पुत्री सगकपात्रवदांगः पा ७ अ० पत्रगुरु प्रमि ३ अ०
त्रा २ पं० श्रिनिवत्रमकृत्तप्राते कृत्तः स्वट मृडा अ०
एत्रन पुषिगा २ अ० तिका त्रिइयि अ० तिका वयिः
वाचुचर्मनिवस न कृत्तगनू २ न तमि त मा त अ०
त्रमगु ससत्रः दिव्यचक्रुपिनी कृत्तगह दया २ अ० तम २

१५५
॥

मात्रुत्तुपयसीसत्रनः गभवन्निपत्रमाशुवडगीता॥
नागवसक्त॥ मात्रुत्तुप॥ वक्तुववसुधत्रा॥ पिगवर्धमक
मूर्यः विविगप्राहत्रनः एषनियारकनकएद्रयठ
वामकत्रधत्रीः दहि नष्टएयमूजाः स्वतात्रा२ उं वडि
एवहंः प्रात्रसागत्रष्टक२ उं वडि दृष्टमिः कृमिदनि२
मदनिवडि एववजवन्धहंः विठ्वएत्रनसयत्रा२ नि
सात्रएवकु२ उं हिमागत्रिः ॐ नुमर्चयूजाः गुमका

॥

निवृत्तसत्त्वपूजयामि २ म मृलकर्मसु साधय २ साधय २
क्षीक्षीतं ज्ञेयाहा २ नो मिश्री धन इहितः यातात्र वृत्तं ।
दिवि विउपहातं पूजयामि २ शाश्वत सिंह मोतिः मा
त्रवत्र हर्जनः दिवि शावसु च गाः म मृलत्रि व्यामि २
सगगुगुवत्रलः सितगगधत्रीयाः गमवनि ज्ञावाय्यः
संघसयत्रा २ र मिषधन विविः गस्य रुत्रयः सर्वसः
त्यहिया संसात्रगत्रनं ॥ ५ ॥ आगहेतव ॥ नात्र इय ॥

ॐ
ॐ
ॐ
ॐ
ॐ

निर्माणा मूज मध्यग गङ्गा यः परम मय पत्रि यः
ग्रीणा रविध मय गहि नः पर पत्त वाः नी ल व र्त्त त्रं ज
न सि त सा था पि ना ॥ ॐ ॥ हं हं कं हं वं ज्ञा वा र्थ म
कु वि न्ना णि नाः क र्म व डि स हि त पु ष्टा सा गृ षी र्व ज
मि ष्टा हि म थ प त्रि पु र्त्त ह तु नाः ए व स मृ ड ग त मः ति
क र्म ह त र्ग र्प र्थ द त र ग त य र्प स ग सं त्रा डि नाः प र्प
वि णा ति र दि त रू ष का य र द डि न द त र ग त व ज व स म

समग्रपाः। प्रि। एव न समग्र सः। उपाय विष्णु वि। २ पवि म
दत्र गगः। वी। स्व स्व वि नाः। ध वल व न ह स स्व डि ना २ उ
ए त्र दत्र गगः। घ ७ धा व ना दि ना २ हान स ग्र पि नि। वि
वृ ३ न नि २ अ ग्ना दि दत्र गगः। स्व ता पि ना ग्र ना। स्वा
म व म्त्रि ३ ध पि या ३ २ पू व्य विं न्वा डि ना। वि ध म य ए
डि नाः। पु न मा मि व ३ स स्व। गित सा धी ना॥ ३ ॥ ग
ग म धू म न॥ ना म ३ ३ मा न॥ स मि त्र य हं ए क क म ल

निचत्र ऊत्रः सुवर्त्तवत्र ऊत्र ऊत्र वने २ पस्त्र लि तदिन
 मुनिः सायत्र एतरीः मरु कत नृश गत्री न गति ॥ ३ ॥
 उं आरुं रुं उं आरुं रुंः उं आरुं २ मृत् मात्र वायु च म्मह
 विग मृडाः हां हां कात्र विष नयद मृषं च कत्रिग वृत्रि
 ण द्य ८ मृत् गत्र दिह ऊः रुत्रु क आलि रु प दं २ वि ष्ववि
 पस्त्र सियः मृत् य नृ न त्र रयः स रवत्र स हि य ना दव
 त्रं २ द ण दि ग पु सा दि त्रः मा त्र वि स ण्य त्रः त्रि व कृ ती च

॥५॥

उडुमिवर्तः जृही मधस्वस्व लदायनि २३ त्रधृकपि
नवस्वदहि नवत्रदकमत्रे जृस्वात्रुवित्रातिता २३
तामउलरमिस्वुनायहं जृलात्रिकदहि जृविहि
दि २४ मवडिनेकवर्तमयुत्रासनस्वित ॥ ५५ ॥ नमः
जाधत्रजृमूनाथ २३ सुपातनमः साधयसीधयदा
नपमिहत्रजृत्रजृ २३ मवडि जि नवत्रजृयमूजाध
त्रः गत्रुजासनस्वितत्रयना २३ त्रहानविग्यनस्वित

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ
ॐ
ॐ

गात्र इह मानः प्रविष्टः तत्र विष्णुमित्रमाहः विमि
श्रान्तु मूत्रमिधमा २ वज्रवाता हि आलिंगन संवल
नानालम्बिमहाकथा ॥ ५ ॥ गेनाहं २ गेना गेनाहं ॥
नीलवर्णवपु वक्रपुमि मूर्खे प्रियमत्र यत्र मानि तु
मूत्रमिधमा २ विष्णु वज्र अर्जुन वल्लुः जगाम मूर्खधरा
हा ७ आह तत्र न भूत्वा तार वज्र घण्टा गजवमं उ मातुः
स्वर्गाग धराः वित्तमान्तु मूत्रमिधमा २ कत्रमिकयात्र

X
१२३४५६७८९१०१११२१३१४१५१६१७१८१९२०२१२२२३२४२५२६२७२८२९३०३१३२३३३४३५३६३७३८३९४०४१४२४३४४४५४६४७४८४९५०५१५२५३५४५५५६५७५८५९६०६१६२६३६४६५६६६७६८६९७०७१७२७३७४७५७६७७७८७९८०८१८२८३८४८५८६८७८८८९९०९१९२९३९४९५९६९७९८९९

प्रतस्त्यागधनः प्रिभूत्रवक्रगीत्रधनत्रादिगंविदिगंकाकास्या
दिऊन्मदादियात्रः सहजकानननुमूत्रुतिधनत्रा२नमामि२ग्री
यक्रसम्बतः गतगुत्रवत्रनेशात्राविगा॥ ५ ॥ मागगध
त्रहेवि॥ तात्रजगि॥ उंजाः रुंरुठपुनैसाहाः मनुविस्
वउवात्रुत्रपूजापूजितपूजसंसाधाः गतास्वत्रुपसंर
यंतुत्र॥ ६ ॥ रवरवरवाहितहत्रीवलिपूजात्रे२घघघा
गय२विद्यहत्रः प२मियात्रसप२सहलिः पं२ज्ञान

सर्ववित्तं सर्वयुक्तं तत्तत्सहस्रं पुनः पुनः पितृसा च तत्तत्पु
सा त्रुलं (जा क जा कि नि इ य) अष्ट स्म षष्ठं नः तुं तु व ह
ली गृह्ण गृह्ण हरे २ समया आत्रु नु दानपतिः सर्वसु
वसं पुदसा निवे २ अथै अथै व ह अं थ पित्रथ गः अत्र
७ मातिका हवन्तु २ दानपति सर्वकार्यसिद्धिः मना
त्रथ सर्वसु वपदसा निवे २ आत्रु सं सातुः गथा गगवय
ने। स्वहायं कात्र हवन्तु ॥ २ ॥ तुं सिद्धिं न विधि ॥ १

१२५५

नागविरास॥ गान्धर्वा ०॥ हं हं हं दह धत्रुः संवात्रग दह ध
त्रु रवं दशालिं म न जा ग धत्रु र ह व जा उ क म ना हं ॥ ३ ॥
ह व जा उ क ग ना हं हं हं ग ना ग ग हं हं हं ॥ ह न न ल व डि ग
व त्र न व न २ कू स म वी त्र य न द ह ध त्रु २ ए व वि म कू ग वि
स्य ह ता ॥ उ क ग न आ का ति या त्र २ न मा मि २ गी ह व जा ॥
उ क ग न आ पि वि या त्र ॥ ३ ॥ गान्धर्वा त्र वि ॥ गान्धर्वा
मान ॥ पु वि स य ए ग व न म हा मा ऊ पू त्र य ॥ द स या नू ल त्र

१३ विरास

वाचिपदं २ जनामत्र एव च न मावय। पत्रमा मृतमय
पत्रमा गृह २ ७ हिवस्तु महायानमया तम। वाचिचिका
मृतपानलकं २ देसयिऊ ह मरुचत्रगु हेः तथ गानू
त्रवाचिपदं ॥ ५ ॥ उंसर्वतथा गतयूजनयान। जात
मृष्टपापगनू २ पर्य्यायदसिष्या पत्रिवक्ता। क मत्रकू
लिसयत्रिक मत्र २ कू ह म उदक म कूठासन क मत्राः ३
न कूत्र समया वा य्यपदं २ मनुष्यजनदपनि सत्र उप

॥१॥

दधयत्रगतिपदराग्वत्रं२सतगुत्रूचत्रलकमत्रप्रमद
प्रापितशानतुमहासुरवं२एनकिपिधूमगिसूनिना
शूतन/पुनमामिसहजानतुत्र॥ ॥धन/पुमादिग॥ १
रागष्टममाग्री॥गात्रअकमा०॥सहजसंभ्रात्रहदत्र
नत्राया/प्रिअवननाधःदहिवित्रासा२॥ ॥संजयि
महात्रस/गुकारिष्यकैःकमत्रकूत्रीससं/ओगसंरावा
गधनेसत्रुपिनि/दवीविषव्यापिनी/किदन्नित्रमना

महासूर्यदागा॥ उर्द्धद्वेषतनादिः प्रविष्टा ययीस्यः प्रानवि
 द्ये च उ॥ रेदियागयहं॥ गुगुडयसाहु॥ ज्ञनूहत्रकियाः
 देहि मप्रानाः संसात्रसमुद्रा॥ ॥ नागरेत्रवृकालयि
 पंचमः नागजज्ञनमा०॥ कात्रयि त्रिथिउवात्राः मूमूनीन
 ककीनाश्चनकापिथिउवात्राः कनूनेकियालीनत्राला॥
 मत्रयाजकनूत्रवाजयियाः णिडिवाजयियाः वजयिया॥
 गहिवात्रुखाजयीगमः मयनात्रावनयायियाः रहलिं

1527

॥ ॐ नमः ॥

समय २ त्वं ज्ञाता त्रिक कर्तृवत् २ कृच्छ्र त्रि २ देह धनः । त्वं
मा कत्र सित क मत्र धन २ वज्र सूर्य ज्ञान त माः विधम
य समत्र संदा उ म हो २ क ७ क ७ क माला धनः । त्र ला ध क
वत्र वज्र सित २ सा सा त नि सा त ला व धन माः सा सा त सह
ज स ला व धन २ उ हि उ हि डि न डि क समयः का य नि व
च न नृ वज्र धन २ हं हं झी झी उ हा ध क स ग गा । म व त य
त्रि त य न व मा उ २ हं हं । ज्ञादि न च त न वत्रः पु न मा मि

५
॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥ ५५ ॥

सुत्रग वज्रसिद्धि ॥ ५५ ॥ ॥ गगनपदगीत्री ॥ गगनपदगीत्री ॥
साउपजाएत न कि यात्रि य स मयत्र ॥ धनयिक वात्रि न ह
सा २ गिय गोय न म गि या सा ५५ नः म कू ठ कु ण दि गः
मयत्रा ॥ ५५ ॥ ॥ गगनपदगीत्री ॥ गगनपदगीत्री ॥
मात्रुकात्रा २ ह म वि ता हि तः वज्र वा त्रा हि ॥ रुं दा म हि या
त्री त्र सा त्रा २ सा त्री ए ग य नः वत्र ह ह म य नः क र्पू त्र ए त्र
यी ता म्वा त्रा २ ग ग न नि ता वा त्रि तः व न्नि त्र जा ता म्वा त्र

मनुत्रहवतीनारण्यधनूरवदागः। कादिलगसम्वतः। पु।
 यिसयीसूयएवकात्रारहमवीत्राहित्रः वउवात्राहि। तु
 क्रविस्सुदसिज्जस्वत्रारगभवन्निनीत्रावउऊगियाइ
 सगगुवत्रनेऽशत्रा(य)इहमयाशानअःरुतीरात्रा
 मनुतः। सम्वतवउवात्राहि॥ ५॥ ॥ माग(य)उगित्री॥
 मात्रअति॥ चउिइमादित्रः। जहिनिचउात्रिः। ॐ॥ थंकात्र
 ज्जघसिदिगगनसंराव॥ ५॥ ॥ जेयाहत्रववउकवा

॥ १५५५२॥

ग्रीत्रः वमहंमः कादित्रः नित्रवर्त्तसराय २ पंक्ष तधगत
कल्ल धात्रीया तुम्बि २७ हा कायड धात्रीत्रः सित्रचक्र
मृत्ति २ लुं धात्रज्जगत्तु किहृवः सहजसराय २ सर्व
सहजधधत्रीत्रः उमात्रुवर्त्तलो २ मात्रुवा हृवर्त्तवः
रुडमुत्तु कत्तलाः एनतिल्लमः स्वाभिनीः जलवर्त्तसराय
य॥ ३ ॥ गगल्लमत्तु गित्री ॥ नकमत्री कात्रः वत्तिकु
३ लकन्तित्रावत्तु मवत्रसुविगः गित्रीवत्तु नत्रसि

+
१ वत्तिकुत्तु

तमात्रा २ सत्र चक्रि चक्रि त्रेयाः एस्मवि एस्मिगः गगन भात्री
वन्द्यात्रा ॥ ५ ॥ एस्मूण गिह त्रुवः दमात्रा कोत्राः श्रु
नाथसित्री सम्यत्रा २ वज्रक गो गक हा एधत्रीयाः क ५०
दीत्र हं स्व घा ए २ सस्त्र ग क गी नीः क मत्र बी हा सि ग्य लो
महा सु स्व भत्री प सा ३ २ वज्र वात्रा हि एलि ग न सम्यत्र
नां ५ यि व रु बी ह एं ए २ वा रु नी कोत्र यि क्रि द नी ह त्र
वः ५ ५ ए व रु त्र न पु सां ६ ॥ स रु उ सं या वि त्रे याः गभव

[illegible]

इयितात्रा वाजयिनाचयि सहजसंत्रुपिनी॥ ॐ ॥
वज्रसिंघकल्लुङ्गुत्रा कल्लुङ्गु कल्लुङ्गु कल्लुङ्गु कल्लुङ्गु
वज्रकल्लुङ्गु उ मे वत्रा वत्रा लना पुत्रा वनि॥ ॐ ॥
एवप्रदयानत्रके जधत्रक रदाहिनी गधनकया या,
लावा लाववी वज्रिगः ज्ञानुत्रगगन संत्रुपिनी॥ ॐ ॥
प्रमपवज्रप्रदसिंघगगधत्री या रगधयिहा सकुत्री
गः २ ज्ञानुत्र सिद्धिपुमा कुपदायनीः पुनमा मि श्रीव

अथागिनीः॥ ३ ॥ गगन-धर हेतवी॥ चउ नात्र॥ हतसि
तमकूटकीर्तिकःमनितासिगःवत्र नरुगमरसाहियकज
सत्यपत्रमसत्रःपदमपदकि॥ ३ ॥ गगन-धर नीवरु
पिपिकुधगगःपद्मजो गध॥ ३ ॥ वात्रीशुक्रनवाः
तिशुक्रगगःदेहधर॥ ३ ॥ गगन-धर हेतवी॥ जगि
नात्र॥ शिखरवनक्रीगमृगीजृनृतायनःत्रीनयवकि
नांशियवजसत्यपत्रमसत्रःत्रीनयवकि॥ तस्मिन्सहज

१६ न सिन ॥ + ति व न ॥

॥५॥

किं न भवति सूर्यः संहास्य वनि ॥ ५ ॥ बह्वीह त्रूप वीः
सात्रं नूनाय नः गत्व यवनि ॥ ५ ॥ आ ग क ह ॥ ता
त्र मा ० ॥ जयं क च्छ्री द वी त्रु व दे वी ध त्र नः स य त्र ह
ता ह त्र व दित व त्र ल ॥ ५ ॥ ग ह ग व मि या ड क म
त्र म हि म लि ग र ने उ त्र त्र न ड न का त्रा २ हा ७ ज्ञा ह
त्र षाः ए त्र न वि र वि त नो य त्र घ ष ड उ त्रा त्रा २ णि नि २
मि न य उ न य ना ग ना ॥ ५ ॥ हिल म सि नू त्र धा त्री

कंजव न येनः कस्तुती कर्पूत्ररत्रयिता भ्रात्रा ॥ ५ ॥
 कत्रगिकयात्रधत्रीः मूत्रमात्ररविताः सुखखवां
 गकयात्रधत्रीन ॥ ५ ॥ हनयिसूत्रगवजवाक
 तीदासः शीवजजागिनीः वत्रदपुष्पद ॥ ५ ॥
 गगविता ॥ गत्रमा ० ॥ उदिता मत्रलयः पुवनधू
 ताः वलसूत्रवा मककासगता ॥ ५ ॥ धात्रइसू
 त्ररयनि सावत्रीताः ज्वयनित्रंजनमाकुगताः

उदितागता ॥

दिनकरमनुत्रमध्यगताः सहजामनत्रसंख्यक
 गा॥ ॥ दग्धजृतिरयपनिहकाः देवाहरनत्र
 संख्यका॥ ॥ गमयन्नियवने इयिगुत्ररगताः
 वज्रवाग्राहीः पुद्गलिनेनमिता॥ ॥ वागप्रभंज
 मी॥ गात्रमा०॥ त्रिहंदावापयिदेहः जर्मदारमनि
 कृत्रवहियानसमाउ॥ ॥ आगिनीपुक्कविनू
 खनेहंनतिवमिरस्वया मूहचूंवीयात्रः क मत्र सं

✕
 ॥ त्रिहंदावापयिदेहः ॥

पिबमि॥ अथ हं न जागि नित्यं न जाग्री २ क म त्र क
त्री सः च न क त ह वी या त्र २ सा स ग च न धा त्र। क्री वी
क ना त्री २ व उ ह्य र्प इ यिः प ऊ मा न सं र ह २ र न यि
उ जा त्री ह मः कू रू रू वी त्रा २ न त्र य ना त्री मा ड उ र य
वी त्रा॥ ॥ त्रा म क ह ॥ त्रा त्र ड व ॥ का यि त्र वं सा वा
डि त्र विं न्या ॥ अ नू ह ग स व दे वः पि र व त्रि ना॥ ॥
अ नू र म र जी त दा त्र क सि डा ॥ ह दि त्र अ डि त्रा हि

पक्षान्दे २ उदितालो यन्ता नवी जू कां रा २ हा सित्रल
विमजि गगन इवात्रा ॥ ६ ॥ गी गम जं मूनां नृप
गकि गगन सिषत्र सा डः पुवन हं द्रात्रा ॥ ७ ॥
पुवन यं सत्रा नृकू रात्र वन्ता विषत्रि मि कटू न्यः
दात्र क सि जा ॥ ८ ॥

2031 1

॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥

॥ ॐ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

Handwritten text in red ink, possibly a title or a signature, centered on the page. The text is written in a cursive script and is partially obscured by a horizontal line.

ॐ नमः शिवाय ॥

॥ श्रीगुरुदेवविग्रहार्पणम् ॥ नमः ॥

अथिवजया ठी धृगहं कात्रा रुवः मात्रा त्रिपू कुद न अचल
 वीत्रं रसु नयि अन क महा कोट नाया अल्पिय विघ्न स
 सुहने ॥ ५ ॥ हं ग्रा अरव उय र सर्व इ वृत्र की त्रय हं रु
 ठया प हने हं वज किल यः न कल वीत्र अहा काय वाक
 चिख कीलय गिरु ठी च वृ वीत्र अत्रा धिया त्र अनू त्र
 सिद्धि मा अरु ल दं ॥ ५ ॥ पूर्व सगा चल महा वीत्र कू
 उदु व रु कोट त्रु पं र उत्रा व नू त्रु सह अन य नः दवा

同正記

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

× न हाक्री य

दवि

न को न देवी मा हव जि / कु सु नु व र्त्त क र्हि पा उ धा गी र
छा म स न म हा गी दु शु व र्त्त त्रि / द ह ना वि प ति ग ण
की ल य ति ॥ ५ ॥ ने म र्त्त का ल वि शु न व जि / क न
क व र्त्त ग नू द्या ग रू पी र ने त्रा स म हा ली म र्त्त प्र पा उ
ध त्रा क र्त्त र्त्त वि प ति म र्त्त य ति ॥ ६ ॥ वा यू वः
का ल दे वी त्रा ग व जि / शो हि त व र्त्त क र्हि पा उ धा गी र
मृ ग स न वा यू प ता का र्त्त ध नः / सा स ना वि प ति की ल

५६

यमि॥ ३ ॥ ॐ नमो नवत्रका नंदवी ॐ नमो वडो ॥ ॐ नमो
वर्तन नृका र व व र्त्त २ वृषा ह न त्रि न य न त्रि ॐ न ध
त्रि ह न वि प मि स ह व ॥ ३ ॥ द ह न न य न उ ३ दि
त्रि न व नु त्रा व न स फ व न्ना लु या न य मि २ व न्ना न वि ष
त्रि ग ह म ३ स य न र व व त्री मा न ग न सं वृ न्ति ॥ ३ ॥
वो मा ३ ३ ध द मि त वा म न य नं व नु त्रा व न स फ न सा
न नं पा ल य मि २ वृ षि ३ ह न म न ॥ ३ ॥ न ना ग दि स य न

हचत्रिमात्रगननामकत्रे॥ ॐ ॥ दहदिहदाहहंका
नसंरवाः पुनमा मिश्रवद्यमहाग्राधर्ग २ असापत्रि
पूत्रंगदानपतिः ॥ सर्वविद्यनिवात्रगसिद्धिरुलदं ॥ ॐ ॥
श्रीवज्रवीत्रात्राधियात्रात्रनूत्रगसिद्धिमात्रुल
दं २ हं वज्रकीलयत्रकतवीत्रात्राहाकायवाक्यवित
कीलयकि ॥ १ ॐ ॥ धनशुभ्रनृषयाय ॥

गगनमधुसूतः ॥ गगनमधुसूतः ॥ नीलवर्णः केशवः केशवः
 नयनः महावीरः शत्रुघ्नः शत्रुघ्नः शत्रुघ्नः शत्रुघ्नः शत्रुघ्नः
 शत्रुघ्नः शत्रुघ्नः शत्रुघ्नः शत्रुघ्नः शत्रुघ्नः ॥ ॥ गगनमधुसूतः ॥
 गगनमधुसूतः ॥ दहिने स्वयं धनं वासनां नीलां ॥
 मात्रं यत्तु संज्ञां कर्तुं २३ यत्तु च लुप्तं कला लवि
 द्युतकिं नमः शिरीषं ॥ वीरवीरः शत्रुघ्नः शत्रुघ्नः
 पिताः गगनमधुसूतः ॥ गगनमधुसूतः ॥ गगनमधुसूतः

गगनमधुसूतः ॥ गगनमधुसूतः ॥ नीलवर्णः केशमूर्खकेशकेश
 नयनः महावीरः शत्रुघ्नः शत्रुघ्नः शत्रुघ्नः शत्रुघ्नः शत्रुघ्नः शत्रुघ्नः
 शत्रुघ्नः शत्रुघ्नः शत्रुघ्नः शत्रुघ्नः शत्रुघ्नः शत्रुघ्नः ॥ ॥ गगनमधुसूतः ॥
 गगनमधुसूतः ॥ दहिने स्वयं धनं वासनां नीलां ॥
 मात्रयुगलं संगणकं २३५ पुचं ७३५ कला लवि
 द्युतकिं नमः शिरीषं ॥ वीरवीरः शत्रुघ्नः शत्रुघ्नः शत्रुघ्नः
 पिताः गगनमधुसूतः ॥ गगनमधुसूतः ॥ गगनमधुसूतः ॥

५ सिचि कु ति मणी गा ५५

गाः य ३ डि न व न म कू ठ ध त्रा ॥ ध त र णी म भु ल वा म जा
नू स स स व य पा द सू सें सि गाः पा य ल ना पू न डि मि डि
नी का गाः सू ता सू त पू डि ग अ च त्र वी ता ॥ न मा मि ठी
व भु म हा ना व न अ क म हा ए य दु ४ ख ह न र्नीः स त र न र
त्य यि च त र ण क म ल ग व कि ५ र गी गा ॥ ५ ॥
ना ग क ज्ञा तः ष ठ कं का न गा त ॥ प्र च दः प्रिय
मू ख ष ठ ए उ च त र न्म लिः ना ए व नाः
व ऊ घ ण्ठ धा त्रिः न त र णी ल र ठी गे ला क

प्रेमिणि वन ॥

विजयाः विष्णुनाथविष्णुव्यापिगारवूद्धधर्मसंघपालिप्रणि
ज्ञान। पादठात्रनहि गडमामहं वेत्र। विष्णुनाथविष्णुव्या
पिगारत्रकृपिनित्रायनक्रादुवरावाः प्रगिरुखदठाक्रा
दविद्यसंहात्राः रवअपूरकधमिमाहसंहात्राः वित्रविक
मप्रकृतिगकित्रधमरपत्रशुपाधधत्राः लावनदहाः स
वक्रादविद्रुपादसत्रकाः॥ दानवनागममानवदेहाः विर
हंरुधम्मसयत्रसकाः कायवाकचिरुध्यानधत्रकाः कृ
विरयदेहानिर्मजसत्रिना २ एव एयहत्रधमगीग एवनि
ठागगुत्रचत्रलमित्रंगमधत्रिया॥ ५ ॥

ॐ
ॐ
ॐ
ॐ
ॐ

नागगन्धर्वहेलव॥ गात्रजति॥ पूर्वकुशाचत्रः॥ ॐ
नेकोलः॥ ॐ तुहगपुतिगनकीलयति॥ २दहिनस्व
वामगर्जनीया॥ विष्णुवदनयतिविमत्रे॥ ॐ
यद्यथागय२सयलविष्णुहत्र॥ नागयद्वहसमूहत्रः
कित्रय२सर्वपापहत्र॥ शुभजसत्तज्ज्ञात्र॥ ॐ
दक्षिणपीताचल॥ कलनादिको॥ जन्मवैष्णवत्रवि
सहत्र॥ २दहिनस्व॥ वामगर्जनीया॥ विष्णुवदन

ॐ
ॐ
ॐ
ॐ
ॐ

पमिवीमत्र॥ ३ ॥ वसिष्ठमत्रकावलः नेजुलकोल
वनुननाउ सुविच हनेर दहि नखउ वासतर्कुनीया
ठम॥ वीठ्वरवनपमिविमत्र॥ ३ ॥ उलत्रसासाव
ल। वायुवकोल। उऊाचिबानिलविच हनेर दहि न
खउ वासतर्कुनिचाठम। वीठ्वरवनपमिवीमत्र॥ ३ ॥
पुर्कडर्कदठादिमिदठाकित्र। १२ विठ्वनाथविठ्वः
वायवत्र२ उकादिहमिहत्रयउमालल। वीचवीधंस

ॐ नमो भगवते

बुद्धाह त्रिहत्र सदय माता ॥ उ यदत्र नः हवीना ॥ २५ ॥
दिपिदिता धनः सादिक ॥ २६ ॥ विविदि,
आ एतत्तु रविताः दिव्यत्र लोकोत्रि ॥ २७ ॥ गत वांकि
तः सर्वसंय द जडि सिद्धि वत्र पदाता ॥ २८ ॥
नमो भगवते ॥ २९ ॥ नमो भगवते ॥ ३० ॥ नमो भगवते ॥ ३१ ॥
समवन्ति वाय एयना गनी ॥ ३२ ॥ गत पनीता नमः एय
॥ ३३ ॥ स्वहत्र लः सा त्रि यू के द नः ग ॥ ३४ ॥ ना गनी ॥ ३५ ॥

ॐ नमो भगवते ॥ ३६ ॥

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

रुंरुं धत्रति मलुत्रायत्रीः त्रयिगमि मलुलः जानूया
दने म० अचेलवीला ॥ गजघन जि मूगः नीलवर्ग
रंः निविदघन ऊधरी लाकवीलं ॥ दहिन स्व अ उ

~~मलुत्रायत्रीः त्रयिगमि मलुलः जानूया~~

आतिविआसनंः प्रिरवनकं पितः स्रत्र अ स्रत्रं २॥
उमर्जनी रजः गकि या ग धत्रंः इर्वा न इरु त्रिषू

वन्धकलनं॥ अति सांख्य नादीतः श्रद्धा हयंकत्राः छिन्नी
 प्रायन प्रेताकृष्णत्रयी॥ इह स्वप्न युहात्रः मा लवत्र
 मर्दनीः दणदीग मा ल सन्ताण कलं॥ यंचन ५५ ग
 तः स्त ल ग संहत्रनीः वी सु वि धं स नः अ वत्र वी ल॥
 अति मध्य पत्र मा दः वज्र उत्रुणत्रनीः ए न यि स्रत्र
 वज्र उत्रुणत्रनी॥ ५५ ॥ त्रा ग वि त्रा स॥ ता त्र ड यः॥
 कृति स्रण ला ज संः ए द म हा त्र साः अ व य अ नू ए त्र

अ
 ५५
 ५५

विष्णुपुत्रमनीषापासा॥

ॐ नमः शिवाय ॥ देहप्रत्यक्षं विविचित्रं नमः निःसंशयं तद्वि
ता ॥ ५ ॥ नो बयिष्यति ॥ अथ च तदीया ॥ १ ॥ नाथो ज्ञान
उपितासयी ॥ अथ च ॥ ५ ॥ यो मृतं हवः विमृश्यादं
नित्यं ॥ यो ह्यमृतिं गतः ॥ अथ यमहात्रसा ॥ ५ ॥ मात
वतुन दृष्टः निरिवलविष्टः हकारं ॥ १ ॥ स्पनिहिगु र्वप्र
रुनिषां ॥ ५ ॥ विनामागु चतुः ॥ एव एव कलोरत्र
विसमि र्गवदः ॥ गगलतिना ॥ ५ ॥ त्रागके जादि ॥

ॐ नमः ॥ हंकारसमूहकल्याणतत्समाः तत्र मद्रूढम
त्रिगुणः श्रीचण्वीत्रः एवमयदत्र नीः श्रीवववजिनी ॥ ५ ॥
आलाविरचितः प्रणिपाद्यधर्मायाश्चिह्नवचनवन्दि
तः श्रीचण्वीत्रः ॥ ५ ॥ यंतं वं हंकारसंहरवमधः
सहस्रतल्लिखितमः साहित्यः ॥ ५ ॥ वित्रीचीश्रीवमि
संकत्रणवीयमिः सुगीवन्दिनचत्रणः मात्रैर्गन्मदि ॥ ५ ॥
मगणसदृशवर्तुः साहित्यदेहाः प्रियनयनधर्मात्रितः ॥ ५ ॥

रवनवीत्रा॥ ॐ ॥ अवनिनीहितान्नूः अलिंगन
 जयिताः नमस्तुमा तसहितः तु क्रमस्तु धनत्रिया॥ ॐ ॥
 गभवन्निहानवजः वस्तुवीत्रदासः तु ननिधिवत्रहः वं
 दितधत्रीया॥ ॐ ॥ मागदिलस॥ मात्रमा ० ॥ हं
 कात्रसं रवः गु वस्तुवीत्ररत्रसमदुः साहितगित्रर
 नमस्तुमा तः गु वस्तुसाहितरः गित्रावनदुः गनग
 गिमरदहितसद्यः गिरुवप्र २ मात्रगनसर्वसं ग

ॐ
 श्री
 गणेशाय नमः

सिधलमस्तु

ॐ कृत् २॥ वा मसव्य या ठाः ३॥ वं चि तः श्री द व व जी द वी॥
आ तिं गी त २ वि ष्व ना थः वि ष्व वा धि त वी त २॥ ध त्रि णी
नि हि तः जा नू या द २ वृ ष्ण ण कु ह त्रि ह त्र या द तः जा त
मृ प्र ष्व वः मा ह कुं दि ता २॥ पू र्व दि त ग तः स्व तां व त्रि त २
द डि न द त ग तः पी ता च त्री तः य चि म द त ग तः त क्ता
व ती त २॥ उ ह त्र द त ग तः ष्म मा च ती त २ अ न य
द त ग तः मा ह व डि २ नै प्र ष्व द त ग तः पि ष्व न व डि २॥

अध्यात्रीः प्रियं वनवीलाः ॥ हृदि हृत्प्रकाशः ॥ ॐ नमो भगवते
 लोः मातवत्तु गगनः स तु हृत्प्रकाशः ॥ विविचित्रं ते
 नमोतिः त्रिकित् दहा ॥ २ ॥ गगनवीलाः ॥ वत्तु लदाता

॥ ॥ गगनवीलाः ॥ गगनवीलाः ॥ गगनवीलाः ॥ गगनवीलाः ॥
 वत्तुः ॥ गगनवीलाः ॥ गगनवीलाः ॥ गगनवीलाः ॥ गगनवीलाः ॥
 गगनवीलाः ॥ गगनवीलाः ॥ गगनवीलाः ॥ गगनवीलाः ॥ गगनवीलाः ॥
 गगनवीलाः ॥ गगनवीलाः ॥ गगनवीलाः ॥ गगनवीलाः ॥ गगनवीलाः ॥

वात्रिमात्रवडवापियात्रे ॥ ५ ॥ कायवाकचिह्निप्रि
 नीहवनेरदानपगियासूरश्रवतात्रनी ॥ ५ ॥
 यागयागिनीमत्रिः समत्रसंलग्य २ ॥ ५ ॥ समध्वने
 शाहृव ॥ ५ ॥ ॥ तागग-अहोत्रवी ॥ तात्रज
 मि ॥ पूर्वदिगभवनः वडगसमध्वना देवीयुक्तायनि
 हंसाजनी २ ॥ लवमाहाकातागनपगिकुमात्राः वी
 लकुगुयात्रजकुयकुनी ॥ ५ ॥ पूजियात्रममश्र

गीवलीतूचित्राः चोउसगिजागिनीमात्रिकाः तूउरवनन
जुवसमभनः रगपगपिषाचगज्ज॥ ५॥ उरुत्र
गमचनः कालांकूलसमभनः देवीतूझायनीः वृववाह
नी॥ ५॥ ॥ जलनकाजकित्रिंकीत्रिसमभनः देवी
कामात्रीमयूतासुनी॥ ५॥ ॥ नजसुकनतजीव
रुसमभनः देवीवैसुवीः गतूजासनी॥ ५॥ ॥ दडि
मदिगमंचनः धामाचकसमभनः देवीवाताहीमहि

वासनी॥ ॥ पविमदिमं वनः ॥ अहसाससम ॥
दवी ॐ आयनिः गजवाहनी॥ ॥ वायूयकोलः
नकत्रसम ॥ दवी वासुलाः पुतासनी॥ ॥ ॐ
मनकोलः गहात्रगसम ॥ दवी महाल ॥ सिहास
नी॥ ॥ गगहेलय ॥ गगनकनत्रि ॥ जयजयवा
ॐ त्रीसयत्र ॥ अखय ॥ खसंहात्रनी॥ ॥
ॐ न ॥ नयानहा ॥ हावृत्रने ॥ नाचयी महात्रनील

ॐ न ॥

वात्रुग्रहः। जिनपदमान्नीत्रं एहापूत्रकः। जिनजननीव
 अजोगिनी २ अयं अयः। हाउ अहतरन हूव्वहा। कत्रगि
 कपात्रधमत्रनी २ अयं अयः। त्रुड हूव्वम नलकः। गिगि
 वात्रुजननत्रहीत्रमाला २ अयं अयः। तारवहूज गगसंभ
 तः। पुनमानि अहयवाकत्री॥ ॥ गगगधमत्रहेतवी॥
 गात्रवठकं काल॥ यूवीदिगिहितः। बुझयनीदवी। क
 नकवहूगि। हंभसनी॥ ॥ उदिचांदिगिहितः

+
 पुर्वदिगिहितः॥

॥ उर्वदिगिहितः॥

ॐ ज्ञायनी देवीः चतुस्रमदहाः वृषवाहनी ॥ १ ॥ अथ
समस्तं जगत्तुल्यं विप्रं षष्ठं नानां च यिसुहजा ज्ञानकुत्र ॥ २ ॥
२ या म्यादिगिरिगः वात्रादिदेवीः वन्धिसमदहाः महिषा
सनी ॥ ३ ॥ अथ एतथागिरिगः कामात्रिदेवीः अत्रुनसं
नित्याः मयूलासनी ॥ ४ ॥ नैऋत्य एतथागिरिगः वेसु
वीदेवीः हतिगवर्तगीः गत्रुजासनी ॥ ५ ॥ वायु
व एतथागिरिगः कालिकादेवीः सूर्यसमदहाः प्रणासनी ॥ ६ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ महा लक्ष्मी देवी ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ सिंहा
गनी ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मित्रं गतं धर्मात् ॥ गम
वन्ति सिद्धि वज्र ॥ वज्रा वायं गीता ॥ ॐ ॥ राग ग
तरे त्रिवि ॥ तात्र वठ कं कात्र ॥ चक्र गत मध्यमे ॥ सित सं
वीजा ॥ वायु कि ना गम ॥ गति न मे द्या ॥ ॐ ॥ गं क त सम
प्य मे ॥ षष्ठ क रूपा ॥ चूनि न मे द्या ॥ तत्र क ना गम ॥ ॐ ॥
ॐ उज म्भजा गे उ ॥ वक्षि वायु ग्राहक म्भ ॥ दिगं विदिगं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

वत्रिदवतित्र॥ ३ ॥ जृहृहाससमव्यनः कृहृसंवी
त्रेवत्रः नां वयि स रुजा ज्ञाननुत्र॥ कंकत्रीधात्वाः व
रिगमयाः का लांकूलसमव्यनः कंकरीकनमगम॥ क
नकहेरुवाः वरिगमयाः सत्रसिजनागमः वृठकवीडा॥
जृहृहाससमव्यनः जीर्यवात्रनागमः पुवत्रुमेघाः व
रिमहित्रुहा॥ त्रस्त्रीवक्तसमव्यनः कत्रंजरीडाः घुनी
गमयाः महापत्रनागम॥ धात्रीधक्तसमव्यनः पकि

गविजाः अनन्तनागमः पुत्रनलमेया ॥ किलिकितिसुमन्त
 नेः अनन्तवीजाः कुलीकलमगमः वल्लभमेया ॥ दादणर
 जाः दादणरवनाः वयुयुक्तवदन्तः दादणनयना ॥
 एनयीकलपितः तारवरुसमन्तः कालीनापित्रीपूवा
 पयीवदना ॥ ५ ॥ ताममधुमन्तः तामरुजमान ॥
 नमामिश्ठाहृववीताः वडलः सत्रकूतीगजता ॥
 पंश्चककपात्रात्रकूताः ॥ ६ ॥ तिननत्रसंघनीत्रत

१ नमामिश्ठाहृ
 व॥

न॥ ॐ ॥ न नारं २ न नारं न नारं ॥ स यत्र स्या पीतः
क नृ नृ मयः स त्व उ क्ता नृ नृ स नृ नृ ॥ ॐ ॥ न मा मि
ग ज च म वि र वि नाः य्या पु य म स ठ मृ डा ग नृ नृ ग
नः अ क य स मा धिः व क य ठ अ लि ट प दं ॥ ॐ ॥ न
मा मि २ अ लि का ली य चा पि नः दा द न र क र व न न
नाः उ म नृ क न मि प न स्या न गि नृ नृ नृ स्व द्वा ग क पा न
उ क्ता गि ना ॥ ॐ ॥ न मा मि २ च उ वि न गि पि थ नृ नृ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विष्णुवापितः। पुनीशोचनिः। एतमि मूर्तिवत्र हांकवेः न
मा सु२ प स नी ल व त्रा ॥ ५ ॥ नागग न्न त रै त वि ॥
गात्र उ य ॥ पुनीशो य न व उ । उ म्नी हा ला । क त र हं व कि
ध नः । म र्ग त्र हा मे ॥ ६ ॥ हा म क रै या हा मे । न हि च उ
मा ला २ त्रा मु उ व मा ह । व दि त्र का दि या ॥ ७ ॥ वा म द हि
न क रै स त रै पा ण २ क त्रि ग व डा न त्र । ए ह मि क त्री ण ॥ ८ ॥
प्र हा ण ६ उ पा यि त्र व डि २ त्र वि ष मि वा पि या त्रः । आ वा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

यविधत्र॥ ॐ ॥ कर्तुवात्रकः परतत्रहाम २ वायुसंरुदि
त्रोयीयासंवात्र॥ ॐ ॥ त्रागनागक॥ मात्र इद्रुमान॥
रात्रुमनुतमाऊः मा मकिदवी २ शालिका त्रीयवा
यपिहत्रुव॥ ॐ ॥ नमामि २ शु मा मकिदवीः ॐ ए
वननाथा॥ संपूर्ण ॐ नमः ॥ उगतवरवान॥ ॐ ॥
त्रकवर्णवउमृषः ॐ नित्रोवना २ विष्णु कुलिशः ॐ
वचनशत॥ ॐ ॥ एकिनी त्रामाः खत्रुना हात्र

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

विनीरुचुत्रदवीकिदनिबीत्रासा॥ ॐ ॥ एषितरु
नमूजाः ॐ श्रीसंवित्रात्ररुह नयि ॐ नूपमः वज्रमा
मकिदाता॥ ॐ ॥ **त्रागवप्रंजत्रि॥ मात्रमा०॥** वगजा
गिनीदवीः प्रिहव नव्यापिनीरुविज्ञमात्र इह दप्य
विनामनी॥ ॐ ॥ नमामि ॐ श्रीवज्रवात्राहीरुजुहि
सिद्धिदायनीः जगत्जननी॥ पूर्वदुलगत्तमत्तमं
गीरुहं नमामि निदवीः नीलवल्लीगी॥ वायुवाम

हिनीदुवीगितव स्तिरपदि मेसंवात्रितीदवीलोत्रवर्त्स
 गी॥ नैगृत्त संणसिनीदवीः ह त्रितवर्त्स ए २ दहनै चति
 कादवीः ५ मवर्त्सगी॥ वउ त्रिउ नु कानना पंच मूडाह
 ग ॥ २ ससवीउ संणवेनवत्र संदिग स्वता॥ ए नयिव
 आ १ वा य्यसिदि वउ न २ पु म मा मि छावउ या गि नीवत्र
 ७॥ ५ ॥ गग य म ज त्रि॥ गात्र मा ०॥ पंच म हा पाउ सम
 यावा लि ए व स्ताने २ द न दि ग द व वत्र जात्रा वि या त्र ॥ ५ ॥

समयाज्ज्ञानदुष्टननिहायि॥ ६ ॥ वित्रंवीत्रव्यत्रवयि
॥ नै। मन्त्रलमाहनिविष्वरुतिया२७ रुंकात्रावतिदा
दवी। दानपगियायि सुनिवालय॥ मय्युसम्वत्रमाउ
कात्रवकुः हवउकायविष्वरुतिया२यागयागिनीम
त्रियाविष्वजननी॥ समयानुष्टननिहायि२हिह
नादवाडियात्रेउमत्रुपसादे। जृष्टयागिनीदानपूय२
जालंधत्रवृतेजृवध्रुवत्रयिया२कर्णपाचत्रलएननि

वि माड ७ ऊँ लः चालि माल वड वापियात्र २ समा वि ठा स
 मत्र माड ७ कात्र चक्र ५ ह वड वि ष्व रात्र २ हे २ ना ना वा
 वि सत्व आ सि वा द नः म लु ल मात्र वि ष्व कात्र २ हे ॥ सिंह
 ना द वा डि यात्र ७ मत्र वा डं तः ७ ष्ट ऊँ गि नी मत्रि ष्टि
 यात्र २ जालं धति पू ता क र्त्त पा ग म वयियाः चालि माल व
 ड चक्र ५ पि यात्र ॥ २ ॥ नाग म धूम न ॥ नात्र ऊँ ॥ ॥ क
 रि त व जा न त्र ठी चक्र समत्रः ह का ना ए व डि का य व पु मानंः

✕
 १ क रि त व जा
 न त्र ॥

मां साहृति मयमासंशगाः पंच सात्रिमयमासहकुंडा ॥ ५ ॥
स्वस्वस्वायि २ गे एम कुदहनः पंचामि यात्र सज्जिना २
शिवज यागिनी दाकि श्रीता मास्य जुगो हात्रूपिनी पंचया
गिनी २ कुठि संवित्रदीत्र वत्रः मजुत्रकल ठकित्रिकिना
यमाना ॥ ७ ॥ मजुद्युष्म धनिपुमादिग बाडि यात्रः दानप
तिविद्युविनासिता २ यागिनी पंचदेवीः पंचमशतस्यना
एवकुं ७ ॥ हानि चदियात्र २ मात्रविनासनः त्रु २ स
यत्राः जृति मधस्व रुत माकु एवकु २ सर्वसिचि वाक्

॥ ५ ॥

उह ऊगनाः कत्राहति अवाय्य साकविर्हसा २७ थमा
रुगिरुत्रयानि सयत्राः अत्रुहत्रज्ञानसत्त्वमाउप्रदागा ॥ ३ ॥
नागउत्रवउना ॥ नात्रअकमा ० ॥ दिउउदि मूखणिनी
नयनाः मकूगके ॥ दिगम्बत्रा ॥ ३ ॥ गिनाका ३ ॥ वास
करीठकदहिनकत्राणिः हादअरत्रनरुविता ॥ सूर्यम
उलमाउः नाउवमूत्राणिः नलसित्रमाला सुखारिता ॥
सगप्रवत्रने सित्यंगगधत्रीयाः वउवात्राहि अलि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गीता ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सासनीदवीश्चठवदनिदवीश्चत्रितपिष्टुत्र ॥ ॐ ॥
नमामिष्ठाहेत्रवमातृकागनयति कूमात्रा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
युगासनीदवीः विन्नुपायश्चत्रीवैकुण्ठीदवीः वदनधारा
त्रुपिनीवात्राहीदवी ॥ कुंकूमवदनी ॥ शायनीदवी ॥ क
नखपुष्पश्चत्रिकंकाजमूनीः पुनमामिदवीष्ठासहायः

ॐ श्रीसुत्रम् ॥ १ ॥ त्रगमात्रम् ॥ त्रमा ० ॥ निउपुवज्ज
वपुवहत्रुवल यिया २ सित्रीहृत्तगमनेयागिनीपुवीहृत् ॥ २ ॥
शानतादिउयवाकृतीः शानतुलीयाः नावयिहत्रुवम
नसासंपूत्र २ ७ कृत्तियिवात्रुनीउकूलहत्रुवः ७ वलिज्ज
नखनेकवउकया ॥ ३ ॥ ७ उदयानिलकूलयिचडा
त्रीः गीतज्जनेहनेनका ॥ ४ ॥ पयिसयिह्वीज्ज
पंसंराः किउनि क मल कृत्तिगगीहृदवन्ध ॥ ५ ॥ ७

ति कालि इयिगात्र वाङ्मः ७ काने कया गिभी मधु लत्रा
या ॥ ५ ॥

१ॐ नमो १ प्रागुयवजसत्याय १ ॥

॥ जाडी ॥

१ॐ नमो १ प्रीचंदुमहावाचसाय ॥

॥ कला ॥

१ॐ नमो १ प्रीपद्मनृष्यवाय ॥

॥ जाडी ॥

धवजस्तु ॥ धामय ॥ १ ॥

॥ १ ॥ कला ॥

कमलवतल ॥ समुदितु ॥ २ ॥

॥ गज ॥ २ ॥ जाडी ॥

सहस्रवतल ॥ समलसं ॥ ३ ॥

॥ राव ॥ ३ ॥ कला ॥

समाधिगुन ॥ श्रवय ॥ ४ ॥

॥ ज्ञान ॥ ४ ॥ जाडी ॥

सुसजिनमय ॥ जिनवतल ॥ ५ ॥

॥ रूषिगं ॥ ५ ॥ कला ॥

दह चय ॥ गथगा ॥ ॥ ६ ॥ ॥ संज्ञं ॥ ॥ जाडी ॥

कज्जल जस ॥ मदि न ॥ ॥ ७ ॥ ॥ विलासिन ॥ ॥ कला ॥

धर्मन ॥ गिजुवन ॥ ॥ ८ ॥ ॥ जयं जयं ॥ ॥ जाडी ॥

कलिसकय ॥ सन्य ॥ ॥ ९ ॥ ॥ निरूपंति ॥ ॥ कला ॥

शिव उ सत्य ॥ पजमाणु ॥ ॥ १० ॥ ॥ जाडी ॥

चंभां चंभां सैं गंगका मंजु पी रं सैं जांग पृथं नुं कुं जां चिं सिं रं किं
नं नुं मां जां रं किं नसूं चं पी गां रं नं मां मिं तां जं कुं लिं स्यं ॥ चं चिं गां रं
गीग ई ई ई ई २



